भारत का सामरिक पेट्रोलियम भंडार

चर्चा में क्यों?

हाल ही में पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय ने लोकसभा में एक लिखित उत्तर के दौरान **सामरिक पेट्रोलियम भंडार** कार्यक्रम में बहुमूल्य जानकारी प्रदान की।

सामरिक पेट्रोलियम भंडार:

- **परिचय:**
  - **सामरिक पेट्रोलियम भंडार (SPR)** कच्चे तेल के वे भंडार हैं जिन्हें भू-राजनीतिक अनिश्चितता या आपूर्ति व्यवधान के समय में कच्चे तेल की आपूर्ति सुनिश्चित करने वाले देशों द्वारा बनाए रखा जाता है।
  - **देश की वृद्धि और विकास के लिये** ऐसी भूमिगत भंडारण सुविधाएँ **ऊर्जा संसाधनों के निरंतर प्रवाह** को बनाए रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

नोट:

- **अंतर्राष्ट्रीय ऊर्जा कार्यक्रम (International Energy Programme- IEP)** पर समझौते के अनुसार, **कम-से-कम 90 दिनों के लिये शुद्ध तेल आयात के बराबर आपातकालीन तेल का स्टॉक** रखना अंतर्राष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी (International Energy Agency- IEA) के प्रत्येक सदस्य देश का दायित्व है।
- गंभीर तेल आपूर्ति व्यवधान के मामले में IEA सदस्य सामूहिक कार्रवाई के हिस्से के रूप में इन शेयरों को बाज़ार में जारी करने का निर्णय ले सकते हैं।
- भारत वर्ष 2017 में **अंतर्राष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी (IEA) का सहयोगी सदस्य बना।**

- **भारत में वर्तमान SPR अवसंरचना और क्षमता:**
  - इंडियन स्ट्रैटेजिक पेट्रोलियम रिज़र्व्स लिमिटेड (ISPRL) को भारत सरकार द्वारा वर्ष 2004 में पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय के तहत एक विशेष प्रयोजन वाहन के रूप में बनाया गया था।
  - भारत में कच्चे तेल की मौजूदा भूमिगत SPR सुविधाओं की संयुक्त धारिता 5.33 मिलियन मीट्रिक टन (MMT) है। ये भंडारण स्थल रणनीतिक रूप से दो राज्यों में स्थित हैं:
    - विशाखापत्तनम, आंध्र प्रदेश - 1.33 MMT धारिता
    - मंगलुरु, कर्नाटक - 1.5 MMT धारिता
    - पादुर, कर्नाटक - 2.5 MMT धारिता
- **संभरण रणनीति:**
  - अप्रैल-मई 2020 में कच्चे तेल की कम कीमतों से प्राप्त हुए अवसर का लाभ उठाते हुए, भारत ने अपनी मौजूदा SPR सुविधाओं में सफलतापूर्वक पूर्ण धारिता का संभरण किया है।
    - इस सामरिक कदम के परिणामस्वरूप **पर्याप्त बचत हुई, जिसका अनुमान लगभग 5000 करोड़ रुपए** था।
- **विस्तार योजनाएं और वाणिज्यिक-सह-रणनीतिक केंद्र:**
  - जुलाई 2021 में, भारत सरकार ने दो अतिरिक्त वाणिज्यिक-सह-रणनीतिक SPR केंद्रों की स्थापना को मंज़ूरी दी।
    - चंडीखोल, ओडिशा- 4 मिलियन मीट्रिक टन क्षमता
    - पादुर, कर्नाटक - 2.5 मिलियन मीट्रिक टन क्षमता (विस्तार)
    - कुल 6.5 मिलियन मीट्रिक टन भंडारण क्षमता वाले ये केंद्र सार्वजनिक निजी भागीदारी (PPP) मोड के तहत संचालित होंगे ।
- **स्थानांतरण और समयरेखा:**
  - 60 वर्ष की छूट रियायत की अवधि समाप्त होने पर, रियायतग्राही **सिंगल मूरिंग पॉइंट्स (SPM) और ऑनशोर/ऑफशोर पाइपलाइनों** जैसे बुनियादी अवसंरचना और SPR को भारत सरकार को वापस स्थानांतरित कर देगा।
- **रिज़र्व का इतिहास:**
  - वर्ष 1990 में **पश्चिम एशिया में खाड़ी युद्ध के दौरान**, भारत एक बड़े ऊर्जा संकट से जूझ रहा था, ऐसा माना जा रहा था कि **इसके मौजूदा तेल भंडार केवल तीन दिनों के लिये पर्याप्त हैं।**

- हालाँकि भारत ने उस समय इस संकट को सफलतापूर्वक टाल दिया था, लेकिन **ऊर्जा व्यवधान का खतरा आज भी एक वास्तविक और निरंतर चिंता** बनी हुई है।
  - इस **ऊर्जा असुरक्षा** से निपटने के प्रयास में **अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्त्व वाले प्रशासन ने वर्ष 1998 में रणनीतिक पेट्रोलियम भंडार स्थापित करने का विचार सामने रखा।**
    - वर्तमान समय में, जैसे-जैसे भारत में ऊर्जा की खपत बढ़ती जा रही है, ऐसे भंडार विकसित करने की प्रासंगिकता भी बढ़ती जा रही है।
- **विश्व में सबसे बड़े वैश्विक रणनीतिक पेट्रोलियम भंडार हैं:**
  - संयुक्त राज्य अमेरिका- 714 मिलियन बैरल
  - चीन- 475 मिलियन बैरल
  - जापान- 324 मिलियन बैरल

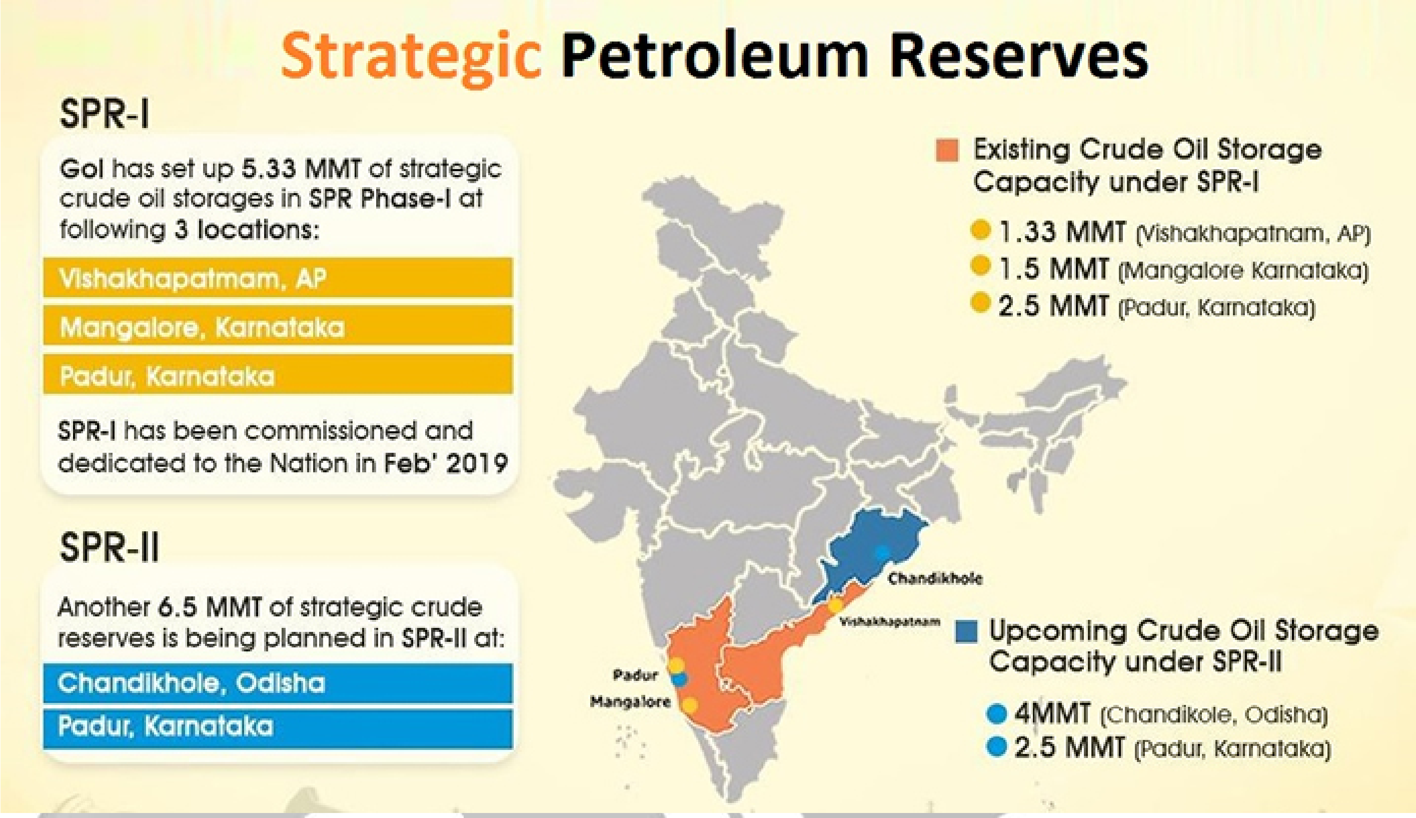

//

सरोत: पी.आई.बी.

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/india-s-strategic-petroleum-reserves